।। कुंडा पंथी के संवाद ।।
मारवाडी + हिन्दी
*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ कुंडा पंथी के संवाद लिखंते ||

|| कवत ||

कुळ कारण मरजाद || जोय पसु वन के नांही ||
अेकण कुंडे पीछ || सरब खाणा संग खाही ||
भोग विलास न भ्रम || बेन माई नही जाणे ||
ज्यां पुळ बरते रीत || ताय सुं ही संगम ठाणे ||
लख चोरासी जीव के || भिन्न भाव नही माय ||
सुण पंथी सुख राम के || मोख कुण सा जाय ||१||

ये कुण्डा पंथी,कुल का कारण और मर्यादा,कुछ भी नही रखते है । किसी की भी स्त्री को कोई भी पुरूष भोग कर सकता है । वह स्त्री रीश्ते की हो या गोत्र की हो या जाती की हो या दूसरी जाती की हो या दूसरा ही पुरूष रहे ये संभोग करने में कोई कारण नही रखते है और एक दूसरे की मर्यादा भी नही रखते । ये सब ब्राम्हण से लेकर,शुद्र,मांग,मेहत्तर तक,एक ही कुण्डी में मांस–मछली और दारू खाते–पीते है । और भोग विलास करते है । माँ या बहन को भी नही जानते । जिस समय,जिस स्त्री से प्रसंग होता है,उस समय,उसी स्त्री से भोग कर लेते है । इनके लिए याने कुण्डापंथ वालों के लिए,सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले,अरे ये तुम्हारे जैसे चौरासी लक्ष योनीयों के जीव,जंतू,पशु,पक्षी,ये सभी अलग भाव नही रखते तो ये पशु–पक्षी सभी ही तुम्हारे जैसे बर्ताव करते है । चौरासी लाख योनी के जीव भोग करने में कुल का कारण और मर्यादा,नाते–रीश्ते तुम्हारे जैसा कुछ भी नही रखते है । ये सभी जाती के जीव एक ही बर्तन में एक ही जगह पानी पीते है और सभी जाती के जानवर तुम्हारे जैसे एक ही जगह पर खाते है और ये जीव भी माँ या बहन से भोग करते है,एवम् तुम्हारे जैसा भ्रम या कारण नही मानते है । जिस समय जिससे प्रसंग आता है,उस समय उसी से तुम्हारे जैसी रीती अपनाकर सम्भोग कर लेते है । इस प्रकार चौरासी लाख योनी के जीवों में भी तुम्हारे जैसा भिन्न भाव नही है तो कुण्डा पंथीयों सुनो,इस चौरासी लाख योनी के जीवों में,कोई मोक्ष को जाता है क्या वह बोलो ? ||१||

|| इति कुंडा पंथी को संमाद संपूरण ||